हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा दिनांक 16 सितम्बर 2021 को विश्व ओज़ोन परत संरक्षण दिवस का आयोजन

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा दिनांक **16 सितम्बर 2020** को **विश्व ओज़ोन परत संरक्षण दिवस** मनाया गया। इस कार्यक्रम में संस्थान के सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों, ने परोक्ष रूप तथा कर्मचारियों, शोधार्थियों तथा क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्रों एवं वन विज्ञान केन्द्रों के कर्मचारियों ने ऑनलाइन के माध्यम से लगभग 62 लोगों भाग लिया। डॉ. जगदीश सिंह, वैज्ञानिक-एफ ने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ॰ एस॰एस॰ सामंत, आमंत्रित मुख्य वक्ता **डॉ. एन एल शर्मा** प्रधानाचार्य राजकीय डिग्री कॉलेज पनारसा, मंडी हिमाचल प्रदेश, अधिकारियों, वैज्ञानिकों, कर्मचारियों तथा शोधार्थियों का स्वागत किया एवं कार्यक्रम की रुप रेखा प्रस्तुत की तथा ओज़ोन दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होनें बताया कि धरती पर ओजोन परत के महत्व और पर्यावरण पर पड़ने वाले उसके असर के बारे में जानकारी के लिए हर साल 16 सितंबर को ' विश्व ओजोन दिवस' मनाया जाता है।

कार्यक्रम के प्रारंभ में **डॉ. एस.एस. सामंत**, निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने कार्यक्रम की मुख्य वक्ता डॉ. एन एल शर्मा प्रधानाचार्य राजकीय डिग्री कॉलेज पनारसा, मंडी, वैज्ञानिकों, अधिकारियों तथा कर्मचारियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि 1994 में, संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 16 सितंबर को ओज़ोन परत के संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय विश्व ओज़ोन परत संरक्षण दिवस दिवस की घोषणा की। हमें मानव जनित गतिविधियों का संतुलन बनाकर भविष्य की पीढ़ियों के लिए ओज़ोन परत की रक्षा हेतु प्रयास करने चाहिए। वायुमंडल में ओजोन परत सूर्य से निकलने वाली हानिकारक अल्ट्रावाइलट किरणों से पृथ्वी को बचाती हैं। सूर्य से निकलने वाली ये किरणें त्वचा रोग समेत कई बीमारियों का कारण बन सकती हैं। यानी दूसरे शब्दों में कहें तो ओजोन की परत के बिना पृथ्वी पर जीवन सम्भव नहीं है। इसलिए हम सभी का दायित्व है कि मानव कल्याण हेतु ओज़ोन सरंक्षण मे अपना दायित्व निभाएँ।

इसके उपरांत मुख्य वक्ता. **डॉ. एन॰ एल॰ शर्मा**, प्रधानाचार्य, ने पर्यावरण बदलाव : ओज़ोन एवं पोलुटेंट्स पर विस्तृत जानकारी प्रदान दी। उन्होंने कहा कि इस साल आयोजित होने जा रहे विश्व ओजोन दिवस की थीम Montreal Protocol – keeping us, our food and vaccines cool है। विश्व ओजोन दिवस पहली बार साल 1995 में मनाया गया था। यह दिवस धरती पर पर्यावरण के प्रति जागरूकता व ओजोन परत की अहमियत के कारण मनाया जाता है। सूर्य का प्रकाश जीवन के अस्तित्व के लिए आवश्यक है , लेकिन ओजोन परत के बिना पृथ्वी पर जीवन संभव नहीं है। जब 1970 के दशक के अंत में काम करने वाले वैज्ञानिकों को पता चला कि मानवता इस सुरक्षात्मक ढाल में एक छेद बना रही है, तो उन्होंने आवाज उठाई। इस पर वैश्विक प्रतिक्रिया निर्णायक थी। 1985 में दुनिया की सरकारों ने ओजोन परत के संरक्षण के लिए वियना कन्वेंशन को अपनाया। कन्वेंशन के मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के तरह सरकारों, वैज्ञानिकों और उद्योग ने सभी ओजोन-क्षयकारी पदार्थों को 99 प्रतिशत हिस्से को काटने के लिए मिलकर काम किया। 16 सितंबर को आयोजित विश्व ओजोन दिवस, इस उपलब्धि का जश्न मनाता है। यह दर्शाता है कि एक साथ लिए गए फैसले और कार्यवाही, विज्ञान द्वारा निर्देशित प्रमुख वैश्विक संकटों को हल करने का एकमात्र तरीका है। मानवता कई पारिस्थितिक संकटों का सामना कर रही है जैसे कि मरुस्थलीकरण, वनों की कटाई, पानी की कमी विशेष रूप से भू-जल, जैव विविधता की हानि इत्यादि । उन्होंने ओज़ोन के अच्छे बुरे प्रभावों के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि जो ओज़ोन

समताप मंडल (Stratosphere) में रह कर पराबैंगनी किरणों को हम तक पहुँचने से रोकती है। वही जब ओज़ोन पृथ्वी की सतह के पास हाइड्रोकार्बन जैसे जीवाश्म ईंधन उत्सर्जन, नाइट्रस ऑक्साइड, स्मॉग आदि पर सूर्य के प्रकाश की प्रतिक्रिया के कराण पैदा होती है तब श्वसन संबंधी समस्याएं, सिरदर्द, पौधों में बौनापन आदि समस्याओं का कारण बनती है। उन्होंने कहा कि ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को नियंत्रित करके अपरिवर्तनीय जलवायु परिवर्तन को रोका जा सकता है। प्रदूषण के कारण बढ़ती कार्बनडाईऑक्साइड की मात्रा, क्लोरोफ़्लोरोकार्बन, इत्यादि ओज़ोन परत को नुकसान पहुंचा रहें हैं। उन्होनें बताया कि 1970 से लेकर आजतक ओज़ोन परत में 4% प्रतिशत तक़ कि कमी आई है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण पिछले 100 वर्षों में तापमान में औसतन 1 डिग्री कि वृद्धि हुई है, जिसके फलस्वरूप पोलर बर्फ पिघल रही है और एक अनुमान के अनुसार 1979 से लेकर अब तक 20% पोलर बर्फ में कमी आई है। उन्होंने कहा कि हम सभी को ओज़ोन की रक्षा हेतु हर संभव प्रयास करना चाहिए। ऊर्जा बचाओ, पैसा बचाओ, धरती बचाओ के नारे के साथ उन्होंने अपने वक्तव्य की समाप्ती की। **डॉ. संदीप शर्मा**, वैज्ञानिक-जी एवं समूह समन्वयक अनुसंधान ने बताया की आम नागरिक की भी जिम्मेवारी है कि हम कार्बनडाईऑक्साइड और क्लोरोफ़्लोरोकार्बन की मात्रा कम करने में भी व्यक्तिगत योगदान दे । अंत में **डॉ. जोगिंदर चौहान**, मुख्य तकनीकी अधिकारी ने संस्थान के निदेशक महोदय, मुख्य वक्ता, वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, शोधार्थियों तथा क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्रों एवं वन विज्ञान केन्द्रों के कर्मचारियों को कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम की कुछ झलकियाँ

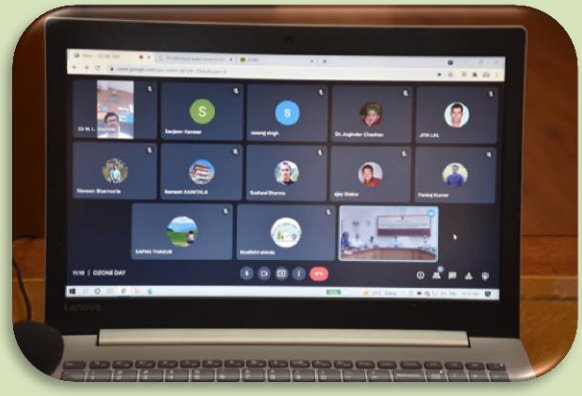

WELCOME

WELCOME

****